Zardozi

आधुनिक ज़रदोज़ी

जरदोजी

Zardozi

ZARDOZI is a Persian word meaning "the art of embroidering on cloth by pressing golden and silver thread" in various designs. For such highclass art, naturally the material of the cloth also has to be of superior quality like silks, velvet etc. In India, gold and silver thread embroidered clothes have been popular since ancient times, such as the clothes prepared for gods and goddesses in temples, and the robes and costumes of royalty.

Huen Tsang, the Chinese traveller who visited India in the middle of the 7th century visited the grand Palace darbar of Emperor Harshavardhana, and has described that he saw the princess wearing a *"jaamani"* (voilette) skirt (*"lahanga"*) resplendent with gold thread and "zari" work, and upper garment (*Uttariyam*) with gold embroidery.

It was during the Moghul regime that the fashion of *Zardozi* work reached its peak. Agra, Benares and Lucknow have been famous for *"zari "karchobi" "kamdani"* and *"Fardi"* types of special embroidery work, but Lucknow became the centre of *Zardozi* during the Nawabi era.

Zardozi work is done on "Adda" with a wooden frame called "Karchob" on which the cloth is tightly stretched. The cloth used for this work is usually Satin, georgette, crepe silk, or velvet, and the work is done not with ordinary needles but with long, thick, hooked needles made of fine wood with which the various shining "kalabattu", "sitaras" (stars) pearls, sequins, salmas etc are stictched firmly on to the cloth. The stitches are of different varieties such as *"dabka", "salma (nakshi)" "Aari" and "Gota"*. The gold and silver threads used for *Zardozi* work are of many varieties and these are selected according to the designs, and according to combinations, some of which require heavy work and others lighter work. For, Zardozi is done on various types of clothes and other items such as saris, *duppattas, lahangas* (skirts), *gharaaras, cholis,* bags or purses, waistcoats, caps and even shoes. The most popular designs are fruits, flowers, birds, leaves, buds, fishes, peacocks, petals, earpendent (jhumkas) etc. Thick and heavy *Zardozi* embroidery is known as *"Karchobi"* in which only "pearls", "salmas" and *"tillas"* are used.

In recent times due to a revived craze for such traditional costumes, the demand for saris, *lahangas* and *duppattas* with Zardozi work has increased, and this provides livelihood for thousands of old and young men and even children. The experts start training children in their "Addas" (frames) and groom them into fine artists. There are numerous Zardozi workshops in old Lucknow and in localities like Muftiganj, Musahibganj, Saadatganj, Mehendiganj, Wazirbagh, Rustam nagar, Chaupatiyan, Amberganj, Khadra, Rassibatan, and Maulviganj where you can see the clothes mounted on frames and the work going on in full swing. The people running this industry are known as "Karkhandar". There is great demand for Zardozi embroidery not only in U.P., Delhi, Punjab, and Hyderabad, but also from Pakistan, Saudi Arabia and other neighbouring countries. Today the popularity of Zardozi is only second to Chikkan embroidery in Lucknow.

Translated into English by : Susheela Misra

Pic privided by : Yogesh Praveen

ज़री कामदानी

ज़रदोजी

ज़रदोजी फारसी भाषा का शब्द है जिसका मतलब है– सोने चाँदी के तारों को कपड़े में दबा दबा कर कशीदाकारी का काम। जाहिर है कि इस तरह के काम के लिए कपड़ा भी रेशमी, मखमली या उसी तरह की कोई मंहगी किस्म का होना चाहिए।

भारत में सोने चांदी की तारकशी के कपड़ों का इतिहास बहुत पुराना है। मन्दिरों में देवी–देवताओं के वस्त्रामरण और राजघरानों के राजसी–परिधानों में स्वर्ण–रजत *खचित* कपड़ों की बड़ी प्राचीन परम्परा रही है।

७ वीं सदी के मध्य में चीनी यात्री ह्वेंनसांग जब सम्राट हर्षवर्द्धन के राज–दरबार में आया था तो उसने राजकुमारी को सोने की जरी बूटीदार जामनी लंहगा (दक्षिणापथ) और स्वर्ण रचित कामदार ओढ़नी (उत्तरीय) पहने देखा था।

ज़रदोजी की रवायत भारत में मुस्लिम शासनकाल में बहुत अधिक पैमाने पर पहुंच गयी। आगरा, बनारस और लखनऊ शहर ज़री, कारचोबी, कामदानी और पर्दा के काम में बड़े नामदार हैं लेकिन लखनऊ के शाही दौर में ज़रदोजी अपने पूरे शबाब पर थी।

ज़रदोजी का काम अड्डे पर किया जाता है। लकड़ी के फ्रेम वाला यह अड्डा कारचोब कहलाता है, जिस पर कपड़ा तना रहता है। इस काम के लिए साटन, जार्जेट, क्रेप, सिल्क, मखमल या कोई भी अच्छा रेशमी कपड़ा लिया जाता है। इसमें सुई के बजाए मुठिया से काम लिया जाता है। लकड़ी की पतली मूठ वाली लम्बी हुकदार मोटी सुइयां, कलाबत्तू, सितारे, मोती और सलमे को उनपर से कपड़े में फंसायी जाती हैं। ज़रदोजी की कढ़ाई की किस्में, दबका, सलमा (नक्शी), आरी और गोटा हैं।

ज़रदोजी में प्रयोग किये जाने वाले सुनहले रूपहले तार अलग अलग ढंग के होते हैं, जो बूटेकारी के अनुसार इस्तेमाल किए जाते हैं। ये तिल्ला, गिर्द, चपटा, झिलमिल कहे जाते हैं, इनमें सादी, कोरी, अद्धी, वगैरह किस्में होती हैं। इस तरह के काम में बहुत अधिक संभावनाएं हैं, जरूरत के हिसाब से यह हल्का और भारी काम किया जाता है क्योंकि ज़रदोजी साड़ी, दुपट्टे, लहंगे, गरारे, चोली, बटुव, वास्कटों, टोपियों और जूतियों, सभी पर बनता है। इस काम की डिज़ाइनों में फूल–फल, कली, मछली, पंछी, मोर, बूटे, गुच्छें पंखड़ी, झुमके, छल्ले आदि प्रमुख हैं।

ज़रदोजी का काम जब भारी और कसा हुआ होता है तो इसे कारचोबी भी कहा जाता है, इसमें सिर्फ सलमें, तिल्ले और मोतियों का इस्तेमाल होता है। तारकशी और सितारों का नहीं।

आज के युग में भी सांस्कृतिक सुरूचि और परम्परागत पहनावों के बढ़ जाने के कारण कामदार लंहगे, साड़ियों, दुपट्टों का प्रचलन बढ़ता ही चला गया और इस तरह इस काम की दिनोदिन मांग बढ़ती ही गयी। आज लखनऊ में हजारों बड़े–बूढ़े और बच्चे ज़रदोजी के काम में लगे हुए हैं और इसी से अपनी जीविका शुरू कर देते हैं, जो आगे चलकर सिद्धहस्त हो जाते हैं।

पुराने लखनऊ मुफ्तीगंज, मुसाहिबगंज, सआदतगंज, मेंहदीगंज, वजीरगंज, रूस्तमनगर, चौपटिया, अम्बरगंज, खदरा, रस्सीवटावन और मौलवीगंज आदि इलाकों में जगह जगह ज़रदोजी के कारखाने लगे हैं, जहाँ अड्डों पर साड़ियां चढ़ी रहती हैं और काम बनता रहता है। इन उद्योगों को चलाने वाले करखनदार कहे जाते हैं। इस काम की मांग उत्तर प्रदेश, दिल्ली पंजाब और हैदराबाद की तरफ तो है ही। पाकिस्तान, सउदिया और आस पास के मुल्कों में भी कम नहीं है। आज लखनऊ के हैण्डीक्राफ्ट मे चिकन के बाद ज़रदोजी का ही बोलबाला है।

योगेश प्रवीन

Pic provided by : Yogesh Praveen

निदेशक संस्कृति विभाग उ.प्र. द्वारा प्रकाशित एवम् **शिवम आर्ट्स** 211, निशातगंज, लखनऊ दूरभाष - 386389 द्वारा मुद्रित।